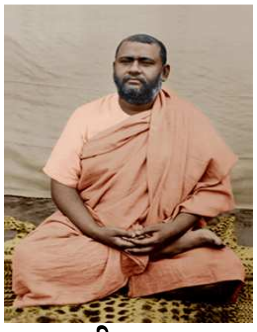
स्वामी ब्रह्मानन्द
(१८६३–१९२२)

स्वामी ब्रह्मानन्द (राजा महाराज) (१८६३–१९२२)

दक्षिणेश्वर में **श्रीरामकृष्णदेव** ने सुदीर्घ साधना समाप्त करके त्यागी भक्तों का संग पाने के इच्छा से श्रीश्री जगदम्बा के चरणों मे निवेदन किया, " विषयी संसारी लोगों के साथ बातें करते करते जीभ जल गयी है" । **जगदम्बा** ने आश्वासन दिया, " भय नहीं, त्यागी शुद्धभक्त आ रहे हैं" । फलस्वरूप देखा गया कि माँ एक बच्चे को सहसा उनकी गोद में बिठाकर कहती हैं, 'यह तुम्हारा पुत्र है'। यह सुनकर **श्रीरामकृष्णदेव** आतंक से सिहर उठे और कहा, 'सो क्या ? अब मुझे पुत्र ?' तब माँने हँसकर समझा दिया, 'संसारी भाव से पुत्र नहीं, त्यागी **मानसपुत्र**'। स्वामी ब्रह्मानन्द ठाकुर के मानसपुत्र थे । ठाकुर कहते थे, "राखाल के आने के कुछ दिन पूर्व ही ....देखाता हुँ कि तब मुझे धीरज हुआ । इस दर्शन के बाद राखाल आकर उपस्थित हुआ और मैं समझ गया कि यह वही बालक है"। यह **राखालचन्द्र घोष** बाद मे स्वामी ब्रह्मानन्द की नाम से रामकृष्ण मठ मे प्रसिद्धीलाभ किए और वे ही **रामकृष्ण मठ** एवं **रामकृष्ण मिशन** के प्रथम अध्यक्ष बने ।स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज **ईश्वरकोटि** थे, जो हर समय, भगवान अवतार ग्रहण करके आते हैं, तो उनके साथ आते हैं।स्वामी विवेकानन्दजी इनके पाव छुकर प्रणाम करते थे।

ठाकुर कि अनुमोदन से **पहलीबार १८८४ ई०** सितम्बर के प्रारम्भ में राखाल ब्रजधाम में उपस्थित हुए बलराम बाबु के साथ **कालाबाबु कुञ्ज** मे । यह वही श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृन्दावन ! यही वह यमुना–पुलिन ! यहाँ के कुञ्ज कुञ्ज में मयुर–मयुरी नृत्य कर रहे हैं । सौंन्दर्यपूर्ण तथा भावगम्भीर ब्रजधाम में राखाल ने विशेष आनन्द का अनुभव किये ।

वृन्दावन में महाराज का **पुनः दुसरी बार आगमन हुआ फरवरी १८९० ई०** के आरम्भ में **स्वामी सुबोधानन्दजी** के साथ । स्वधाम में पहुँचकर ब्रज के राखाल भगवद्भाव में विभोर हो गये । इसी भाव में कितने ही दिन बीत गये, कितनी ही महानिशाओं का अवसान हो गया, पर भगवत्–धान में तन्मय महाराज का किसी ओर भ्रूक्षेप नहीं ! वे

किसी दिन सुबोधानन्दजी द्वारा लाये हुए भिक्षान्न को ग्रहण करते और किसी दिन वह वैसा ही पड़ा रह जाता । किसी दिन मन्दिर में जाकर भावविमुग्ध चित्त से अनिर्निमेष नेत्रों से श्रीविग्रह का दर्शन करते अथवा किसी दिन समाधिमें निमग्न होकर बाह्यज्ञानशून्य हो जाते तथा रात्रि में निद्रा के स्थान पर ध्यान ही अधिक होता । इसी समय **विजयकृष्ण गोस्वामी** महाराज श्रीवृन्दावन में थे । महाराज की कठोर तपस्या की बात उनके कान में पड़ने पर उन्होंने एक दिन उनके समीप आकर प्रश्न किया, "परमहंसदेवने आपको तो सभी प्रकार का साधन, भजन, अनुभूति, दर्शन आदि करा दिये हैं, तो फिर आप यहाँ क्यों पुनः कठोर साधना कर रहे हैं ?" ब्रह्मानन्दजी महाराजजीने मृदु स्वर मे उत्तर दिया, "उनकी कृपा से जो सब अनुभूति या दर्शन हुए हैं, यहां उन सभी को वशीभूत करने की केवल चेष्टा कर रहा हुँ ।"

इसके बाद और भी कई महीने वृन्दावन में बिताकर सितम्बर के अन्त में वे हरिद्वार पहुँच गये । १८९१ ई० को महाराज तथा स्वामी तुरीयानन्दजी राजपुताना से वृन्दावन के लिए चल दिये । वृन्दावन आकर दोनों गुरुभाई दिव्यभाव से भावित हो गये । तुरीयानन्दजी ने एक दिन कहा, "आज भिक्षा माँगने के लिए नहीं जाऊँगा । देखें, राधारानी हमें उपवासी रखती हैं या नहीं ।" ध्यान में मग्न दोनों गुरुभ्राताओं का एक दिन एक रात किस प्रकार बीत गया, इसका कुछ भी ज्ञान नहीं रहा । दूसरे दिन एक तीर्थयात्री अयाचित भाव से प्रचुर खाद्य–सामग्री दे गया । वृन्दावन से वे सभी पैदल चलकर नन्दग्राम, बरसाना, राधाकुण्ड, श्यामकुण्ड, गिरी गोवर्धन इत्यादि के दर्शन कर **कुसुम सरोवर** पहुँचे और इस स्थान को तपस्या के अनुकूल देखकर यहीं ठहर गये । इस स्थान मे दोनों गुरुभ्राताओं का कठोर तापस जीवन एकबार फिर से शुरु हो गया ।

एकवार एक अद्भूत घटना के बारेमे हमें ज्ञात होता हैं की उनदिनो मे दोनों गुरुभ्राताओं का खासकरके स्वामी ब्रह्मानन्दजी का जीवन कितना आध्यात्मिक भाव से परिपूर्ण था । एकदिन रात मे महाराज को निद्रादेवी ने आकर्शित कर लिया । अचानक गहन रात मे उनका निद्रा भङ्ग हो गयी ओर उह्होने देखें एक शुभ्र वेश से शुसज्जित शुभ्रकान्ती ईश्वरीय पुरुष उन्हे आग्रह कर रहें हैं निन्द से जागने के लिए । यह ब्रजभूमी मे साधन

करने का समय है । यह मान्यता हैं कि **मध्यरात्र १२ से ३ बाजे** तक ब्रजभूमी मे साधन अनुकूल वातावरण तैयार होते हैं । तब सभी योगी तपस्वी इसका लाभ उठातें हैं । उस दिव्यपुरुष ने यही समय को दर्शारहे थे । अचानक महाराजको इनका उपस्थित होनें का तात्पर्य समझ मे आयें । तबतक वे दिव्यपुरुष शून्य मे विलीन हो चुके थे । इस विशेष घटना से यह प्रतीत होता है कि यह ब्रज्भूमी परम पवित्र और पावन भूमी हैं । कितने अनगिनत महात्मा, योगी, तपस्वी अपने सुक्ष्म रूप मे यहां साधन में रत हैं और दुसरों को भी साधन में सहायता कर रहे हैं ।